ड्रामा

प्रजापिता ब्रह्मा
जगदम्बा सरस्वती
परमपिता शिव परमात्मा द्वारा ईश्वरीय शक्ति से आदि देव ब्रह्मा द्वारा स्थापित आदि सनातन देवी देवता धर्म-वंश 5000 वर्ष
इब्राहिम द्वारा आत्मिक बल से स्थापित इस्लाम धर्म-वंश 2500 वर्ष
गौतम बुद्ध द्वारा आत्मिक बल से स्थापित बौद्ध धर्म-वंश 2250 वर्ष
ईसा मसीह द्वारा आत्मिक बल से स्थापित ईसाई धर्म-वंश 2000 वर्ष
संगमयुग
कलयुग
1250 वर्ष
सतयुग
1250 वर्ष
द्वापरयुग
1250 वर्ष
त्रेतायुग
1250 वर्ष

शिव भगवानुवाच्....

मीठे बच्चे इस बेहद के खेल का नाम ही है *वेरायटी ड्रामा*। जिनकी अनेक विशेषतायें है...

- ☆ अनादि अविनाशी है...
- ☆ कल्याणकारी है...
- ☆ न्यायकारी है...
- ☆ झु मिसल चलता है...
- ☆ एक्युरेट है...
- ☆ राजोसे भरा हुआ है...
- ☆ परिवर्तनशील है...
- ☆ विचित्र है...
- ☆ बना बनाया है...
- ☆ हूबहू हर ५००० वर्षमें रिपीट होता है।

मीठे मीठे बच्चे अपनी अवस्था को एकरस बनाने के लिये...

- कभी भी सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करो। तुम एक बाप से सुनो। फालतु बातों से किनारा कर लो।
- तुम्हें कभी किसी की निंदा नहीं करनी है क्योंकि इस अनादि ड्रामा में हर आत्मा अपना एक्युरेट पार्ट बजा रही है।
- इस ड्रामा की हर सीन तुम बच्चों को बहुत ही पसन्द आनी चाहिए क्योंकि यह ड्रामा स्वयं रचयिता बाप को बहुत पसन्द है।
- यह दुःख-सुख, हार-जीत का बहुत सुन्दर नाटक बना हुआ है। इस में हर एक्टर अपना विशेष पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए ड्रामा की हर सीन देखकर सदा हर्षित रहो।
- तुम इस कल्याणकारी ड्रामा में किसी को भी दोषी नहीं बना सकते। क्योंकि जो कुछ पास्ट हो चुका है वही होना है। "बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाही, चिंता ताकि किजीये जो अनहोनी हो।" इसलिए किसी को भी दोष नहीं दे सकते। यह ड्रामा की बहुत सुन्दर भावी बनी हुई है।
- जो बच्चे साक्षी-द्रष्टा बनकर ड्रामा में हर एक का पार्ट देखते हैं, उनकी स्थिति मधु समान मीठी बन जाती है। वे सदा एकरस, अचल-अडोल रहते हैं।

– साकारवाणी (18-1-95)

- "साक्षी अर्थात सदा हर कार्य करते हुए कल्याणकारी वृत्ति में रहनेवाले। जो कुछ हो रहा है उसमें कल्याण भरा हुआ है।"

(15-4-81)

स्मृति

☆ ज्ञान मार्ग में भी स्मृति का ही महत्व है ना। जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है। अगर स्मृति श्रेष्ठ है तो स्थिति भी श्रेष्ठ होगी। अगर स्मृति व्यर्थ है तो स्थिति भी समर्थ की बजाय व्यर्थ हो जाती है।

☆ ड्रामा की स्मृति भी अति आवश्यक है। अगर ड्रामा का ज्ञान नहीं है तो भी कर्म में नीचे-उपर होंगे। जो भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियां आती हैं, उसमें ड्रामा का ज्ञान अति आवश्यक है।

☆ अगर यह स्मृति भूल जाती अर्थात फाउन्डेशन हिला तो जीवन की पूरी बिल्डिग हिलने लगती है।

☆ अगर स्मृति में रहे कि यह संगमयुग कल्याणकारी युग है, बाप भी कल्याणकारी है तो श्रेष्ठ स्टेज बनती जायेगी। चाहे बाहर की रीति से नुकशान भी दिखाई दे लेकिन उस नुकशान में भी कल्याण समाया हुआ है, ऐसा निश्चय हो।

ड्रामा के ज्ञानको समजने से होनेवाले फायदें

अव्यकत वाणीयोंमे से

१ स्नेह को ड्रामा साइलेन्स में ले आता है और यही **साइलेन्स**, **शक्ति** को लायेंगी।

२ बिन्दी लगाते जाओ तो **बिन्दी-रूप** में स्थित हो सकेंगे।

३ कवेश्चन मार्क अर्थात टेढा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टोप। इसी विधि से ही **सहज** भी होगा और **सिद्धि** भी प्राप्त होगी।

४ जो फुलस्टोप देना जानते है वह **फुल पास** होते है।

५ बिन्दी लगा दो तो क्या होगा? आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और व्यर्थ को भी बिन्दी, **फुल स्टोप**। स्टोप भी नहीं, फुल स्टोप।

६ त्रिकालदर्शी बनने से फुलस्टोप लग जाता है। नथिंग न्यु- तो फुल स्टोप लग गया ना ! फुलस्टोप अर्थात बिन्दी लगाने से **बिन्दु रूप सहज** याद आ जाता है।

७ बापदादा सदा कहते है कि अमृतवेले सदा तीन बिन्दीयों का तिलक लगाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो हो गया, जो हो रहा है, नथिंगन्यु, तो फुलस्टोप भी बिन्दी। फिर **सारा दिन अचल-अडोल रहेंगे।**

८ फुलस्टोप लगाने का सहज स्लोगन याद रखो-जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह अच्छा होगा ! क्योंकि क्वेश्चन तब

उठता है जब अच्छा नहीं लगता है। इसलिए संगमयुग है ही अच्छे ते अच्छा, हर सेकेण्ड अच्छे ते अच्छा। इससे सदा **सहज योगी जीवन** का अनुभव करेंगे।

९ कोई भी ऐसी परिस्थिति आये तो सेकन्ड में फुलस्टोप लगानेमें स्वयं को सदा पहले ओफर करो - "मुझे करना है।" ऐसी ओफर करने वाले को **तीन प्रकार की दुआयें** मिलती है। (1) स्वयं को स्वयं की भी दुआयें मिलती है, (2) खुशी मिलती है, बाप द्वारा, (3) जो भी श्रेष्ठ आत्मायें ब्राह्मण परिवारकी हैं उन्हों के द्वारा भी दुआयें मिलती हैं। तो मरना हुआ या पाना हुआ, क्या कहेंगे? पाया ना।

१० आपकी **कमाई का जमा खाता बढाने** का सबसे सहज साधन है-बिन्दी लगाते जाओ और बढाते जाओ। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा में भी बीती को बिन्दी लगाना। तो कमाई का आधार है बिन्दी लगाना। और कोई मात्रा है ही नहीं। क्या, क्यों, कैसे-ये कवेश्चन मार्क की मात्रा, आश्चर्य की मात्रा, किसी की आवश्यकता नहीं है।

११ जिसे डोंट लगाना आयेगा वो बाप को भी नहीं भूलेगा, बाप भी डोंट (बिन्दी) है। आप भी तो डोंट हो। **तो सभी याद आ जायेगा।** फुल स्टोप। कवेश्चन मार्क (?)। आश्चर्य की मात्रा (!) या कोमा (,) ये नहीं दो, फुल स्टोप (.)। फुल स्टोप की मात्रा इजी है ना।

१२ बिन्दी लगाई, **कमाई हुई।** आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुल स्टोप लगाना, वह भी बिन्दी है।

१३ तीन बिन्दियों को सदा यूज करो। कवेश्चन मार्क कितना टेढा है, लिखकर देखो, टेढा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रुप से बच्चों के समान बनने की विधि सुनाते रहते है। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है -बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, **कर्मातीत** बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रुहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दीयों का तिलक मस्तक पर लगाओ।

१४ **जमा का खाता बढाने** की विधि है 'बिन्दी' और गंवाने का रास्ता है लम्बी लाइन लगाना, कवेश्चन मार्क लगाना, आश्चर्य की मात्रा लगाना।

१५ बापदादा ने पहले भी कहा है-रोज अमृतवेले अपने आपको तीन बिन्दीयों की स्मृति का तिलक लगाओ तो एक खजाना भी व्यर्थ नहीं जायेगा। हर समय, **हर खजाना जमा** होता जायेगा।

१६ जो भी भिन्न-भिन्न वेरायटी संस्कारो का पार्ट देखते हो, उन पार्टधारियों का इस बेहद के खेल में यह पार्ट अर्थात खेल नूंधा हुआ है। यह स्मृति में आने से कभी भी अवस्था होनी

डगमग नहीं होगी। **सदैव एक-रस अवस्था** रहेगी।

१७ खेल समझने से खुशी-खुशी पार कर लेंगे और वार समझने से गभरायेंगे भी और हलचल में भी आ जायेंगे। ड्रामा में पार्टधारी होने के कारण कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो **एकरस रहेंगे**, हलचल नहीं होगी।

१८ सीट पर सेट होकर वेरायटी ड्रामा की स्मृति रखते हुए अगर एक-एक पार्टधारी का हर पार्ट देखो तो सदैव **हर्षित** रहेंगे। मुख से **वाह-वाह** निकलेगी। वाह **मीठा ड्रामा।** यह 'क्या हुआ', 'क्यों हुआ' यह नहीं निकलेगा, बल्की 'वाह-वाह' शब्द मुख से निकलेंगे अर्थात सदा **खुशी में झुमते** रहेंगे। सदा अपने को **मास्टर सर्वशक्तिमान** अनुभव करेंगे।

१९ वाह बाप, वाह ड्रामा और वाह मेरा पार्ट-सदा इसी स्मृति में रह हर कार्य करते ऐसे अनुभव होता है-जैसे कर्म करते हुए भी कर्म के बंधन से मुक्त, **सदा जीवन मुक्त** हैं।

२० "वाह ड्रामा वाह" याद रहे तो सदा खुश रहेंगे। पुरुषार्थ में कभी **उदासी नहीं आयेगी।** स्वतः ही आप द्वारा अनेकों की **सेवा हो जायेगी।**

२१ "वाह मीठा ड्रामा, वाह हरेक पार्टधारी का पार्ट" इस नोलेज की रोशनी द्वारा, अधिकार की खुशी द्वारा दुःख को सुख में परिवर्तन कर देता। इसको कहा जाता है **नम्बरवन तकदीरवान।"**

२२ वाह–वाह करते जाओ तो वाह–वाह करने से **व्याधि भी खुश** हो जायेगी। देखो, यहां भी ऐसे होता है ना, किसकी महिमा करते हो तो वाह–वाह करते हैं। तो व्याधि को भी वाह–वाह कहो।

२३ पेपर का सामना अर्थात **आगे बढना**, अर्थात संपूर्णता के **अति समीप** होना।

२४ क्वेश्चन मार्क खतम और फुल स्टोप लगे तब **क्लास चेइन्ज** होगा, अर्थात पेपर में पास हो जायेंगे। फुलस्टोप देनेवाला **फुल पास** होगा क्युंकि फुल स्टोप है बिंदी की स्टेज।

२५ विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदिसे अंत तक नूंध है। यह विघ्न भी **असंभव से संभव** की अनुभूति कराते हैं।

२६ जो हो रहा है वह बहुत अच्छा। यह कडा हिसाब **शक्तिशाली** बना देता है। **सहनशक्ति** को बढा देता है।

२७ जो जितना आगे होता है उसको तूफान भी सबसे ज्यादा क्रोस करने होते हैं लेकिन वो तूफान उन्हों को तूफान नहीं लगता, तोहफा लगता है। ये तूफान भी गिफ्ट बन जाती है **अनुभवी बनने** की, तो तोहफा बन गया ना।

२८ वेलकम करो–आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा में ज्यादा गिफ्ट मिलती है, इसमें क्या? **ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति** बनना अर्थात हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक–ठोक करके ठीक करते हैं।

२९ महावीर के मुख से जो होने वाली रिजल्ट होगी अर्थात जो

होगी सदैव वही शब्द मुख से निकलेंगे, जो भावी बनी हुई होगी। इसको ही **सिद्धि स्वरूप** कहा जाता है। जो बोल निकलेगा, जो कर्म होगा वह सिद्ध होने वाले होंगे, व्यर्थ नहीं होगें। महारथी की निशानी है विकर्मों का खाता तो समाप्त होता ही है लेकिन **व्यर्थ का खाता भी समाप्त** होगा।

३० जो सदा ड्रामा के राज को और तीनों कालों को जानता है, वह **राजी** रहेगा ना।

३१ सदा साक्षी हो देखेंगे वह कभी भी हार और जीत के द्रश्य देखकर डगमग नहीं होंगे। सदा एकरस रहेंगे। ड्रामा याद रहे तो **सदा एकरस** रहेंगे। ड्रामा को भूले तो डगमग रहेंगे। अगर ड्रामा कभी-कभी याद रहता तो राज्य भी कभी-कभी करेंगे। अगर साक्षी कभी-कभी रहते तो **स्वर्ग में साथी** भी कभी-कभी होंगे।

३२ सदा शुभचिंतन और शुभचिंतक रहने से सदा साक्षी रहेंगे। साक्षी अर्थात **अभी भी साथी** और भविष्य में भी साथी।

३३ सदा साक्षी स्थिति में स्थित होकर हर पार्ट बजाओ तो कभी भी किसी पार्ट में चलायमान नहीं होंगे लेकिन **न्यारे और प्यारे** रहेंगे।

३४ साक्षीपन ही सीट है जिस पर बैठकर ड्रामा को देखो तो बहोत **मझा आयेगा।** वाह ड्रामा वाह ! का गीत गाते रहेंगे। अगर कोई बिमार भी है, बिस्तर पर भी है तो भी सेवा कर सकते है।

३५ साक्षीपन की स्टेज सदा ही डबल हीरो बनाती है। एक **हीरे समान** बनाती है और दूसरा **हीरो** पार्टधारी बनाती है। साक्षी स्थिति **सहज पुरुषार्थ** का अनुभव कराती है।

३६ क्युंकि लास्ट में जब चारों ओर की हलचल रहेगी, तो उस समय साक्षी स्थिति से ही विजयी बनेंगे।

३७ जो स्वस्थिति में स्थित रहता वह सदा **सुख के सागर** में समाया हुआ रहता।

३८ बापदादा कया चाहते हैं? आपस में रुहरिहान करते हो ना तो एक दो से पूछते हो बापदादा क्या चाहते हैं? तो बापदादा यह चाहते हैं। सेकण्ड में बिन्दी लगे।

३९ एक शब्द 'ड्रामा' याद आ जाता तो इस शब्द के आधार से **हाइजंप** दे देते है। उसमें कुछ दिन या मास लग जाते है और इसमें **एक सेकन्ड** लगता है।

४० तीनों कालों को जानते हो। (१) क्यों हुआ? (કેમ થયું ? શા માટે થયું ?) जानते हैं, पेपर है आगे बढने के लिए। (२) क्या हुआ? (શુ થયું ?) नथिंगन्यु। तो क्या हुआ का कवेश्चन ही नहीं। (३) कैसे हुआ? (કઈ રીતે થયું ?)माया और मजबूत बनाने के लिए आई और चली गई।

४१ कर्मातीत आत्मा तो सोचेगी कि जो होता है वह अच्छा है, मैं भी अच्छा, बाप भी अच्छा, ड्रामा भी अच्छा - ये बंधन को काटने की केंची का काम करती है। बंधन कट गये तो **कर्मातीत** हो गये न !

४२ समर्पणता के कारण बुद्धि सदा हल्की रही, बुद्धि पर बोझ नहीं रहा। मन निश्चिंत रहा। चेहरे पर सदा ही **बेफिकर बादशाह** के चिह्न स्पष्ट देखे।

४३ प्रसन्नचित्त ड्रामा के नोलेजफुल होने के कारण **प्रसन्न रहता**, प्रश्न नहीं करता।

४४ प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से-चाहे बात बुरी हो, संबंध बुरे हो, संबंध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह **बुराई को अच्छाई** में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी।

४५ सन्तुष्टता बाप की और सर्व की दुआयें दिलाती हैं। सन्तुष्ट आत्मा समय प्रति समय सदा अपने को बाप और सर्व की **दुआओं के विमान में उडता** हुआ अनुभव करेगा। यह दुआयें उनका विमान हैं। सदा अपने को विमान में उडता हुआ अनुभव करेगा। दुआ मांगेगा नहीं, लेकिन दुआयें स्वयं उसके आगे स्वतः ही आयेगी। ऐसे सन्तुष्टमणि अर्थात् सिद्धि स्वरुप तपस्वी।

४६ पुण्य कर्म अर्थात् आवश्यक्ता के समय किसी आत्मा के सहयोगी बनना अर्थात् काम में आना। (१) पुण्य कर्म करनेवाली आत्मा को अनेक आत्माओं के दिल की दुआयें, गुप्त प्राप्ति जमा होती जाती हैं। (२) पुण्य आत्मा, परमात्म दुआयें, आत्माओं की दुआयें-इस प्राप्त हुए प्रत्यक्षफल से भरपूर होते हैं। (३) पुण्य आत्मा की वृत्ति, द्रष्टि औरों को भी दुआयें कराती हैं। (४) पुण्य आत्मा के चेहरे पर सदा प्रसन्नता, सन्तुष्टता की झलक दिखाई देती हैं। (५) पुण्य आत्मा सदा

प्राप्त हुए फल के कारण अभिमान और अपमान से परे रहती हैं। क्योंकि वह भरपूर बादशाह है। अभिमान और अपमान से बेफिकर बादशाह हैं। (६) पुण्य आत्मा पुण्य की शक्ति द्वारा स्वयं के हर संकल्प, हर समय की हलचल को, हर कर्म को सफल करनेवाले होते हैं। (७) पुण्य का खाता जमा होता हैं। जमा की निशानी हैं–व्यर्थ की समाप्ति। (८) ऐसी पुण्यआत्मा विश्व के राज्य के तख्तनशीन बनती है।

४७ और बातों में जाना, औरो को देखना माना गिरना और बाप को देखना, बाप का सुनना अर्थात् **उडना।**

४८ सदा ड्रामा के ज्ञान की स्मृति से हर विघ्न को **'नथिंग न्यु'** समझेगा। नई बात नहीं, बहुत पुरानी है।

४९ त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही **निश्चिंत** रहती हैं क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पडी हैं।

५० तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा **हर्षित** रहेंगे, **निश्चिंत** रहेंगे। क्योंकि चिंता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिंत हैं तो **खुशी** सदा रहेगी।

५१ संगम का हर सेकण्ड अच्छे ते अच्छा है – इस निश्चय से **सहजयोगी** बनो।

५२ यह सदा स्मृति रखो कि–कल्याणकारी बाप मिला तो सदा **कल्याण ही कल्याण** है। बाप को कहते ही हैं विश्व-कल्याणकारी और आप मास्टर विश्व–कल्याणकारी हो ! तो जो विश्व का कल्याण करने वाला है उसका अकल्याण हो ही

नहीं सकता।

५३ जो हो रहा है वह अच्छा और जो होने वाला वह बहुत-बहुत अच्छा। तो यह स्मृति **सदा आगे बढाती रहेगी।**

५४ फिर **श्रेष्ठ कर्म** के लिये ड्रामा की स्मृति।

५५ जब ड्रामा का ज्ञान है तो **अचल-अडोल** हैं। ड्रामा का ज्ञान नहीं तो हलचल है।

५६ अनेक बार के विजयी हैं - इस स्मृति से सदा **समर्थ** रहेंगे।

५७ जब भी हाय-हाय का नजारा आवे तो वाह-वाह कर लो तो **नजारा भी बदल जायेगा** और आप भी बदल जायेंगे।

५८ अगर 10 मण से आपका 3-4 मण **बोझ उतर जाए** तो अच्छा है या हाय-हाय? क्या है?

५९ तुफान को तोफा समझा वा अनुभव किया तो उसीसे **हुल्लास** और **हिंमत** अधिक बढेगी। यह है **चढती कला** की निशानी।

६० जो कुछ भी ड्रामा में होता हैं उसमें कल्याण ही भरा हुआ है, अगर यह स्मृति में सदा रहे तो **कमाई जमा होती रहेगी।**

ड्रामा के ज्ञानको न समजने से होनेवाले नुकशान
अव्यकत वाणीयोंमे से

१ ड्रामा की सीन पर मंथन करना - क्यों, क्या, कैसे - यह किस चीज का मंथन है? दहीं को जब मंथन किया जाता है तब मक्खन निकलता है। अगर पानी को मंथन करेंगे तो क्या निकलेगा? कुछ भी नहीं। रिजल्ट में यही होगा - एक तो थकावट, दूसरा-टाइम वेस्ट। इसलिए वह हुआ पानी का मंथन।

२ जब यह साक्षी द्रष्टा की अवस्था नहीं होती है तब यह सभी बातें विस्मृति में आती है।

३ अगर तूफान को तूफान समझा तो हलचल होंगी।

४ 'क्यों' का संकल्प चंद्रवंशी की क्यू में लगा देगा। पहले तो सूर्यवंशी का राज्य होगा ना?

५ किसी भी बात में, यह क्यों हुआ, यह क्या हुआ, जब यह दो शब्द बुद्धि में आ जाते है, तब किसी भी प्रकार का टेंशन पेदा होता है।

६ क्यों शब्द को समाप्त करो। क्यों शब्द के पीछे बडी क्यू है।

७ जो ज्यादा मूंझते हैं - क्या हुआ, क्यों हुआ, कैसे हुआ वह मौज में नहीं रह सकते।

८ क्या हो गया, कैसे हो गया, ऐसा तो होना नहीं चाहीये, मेरे से ही क्युं होता है, मेरा ही भाग्य शायद ऐसा है.... ये रस्सीयां बांधते जाते हो। ऐसे व्यर्थ संकल्प ही कर्मबंधन की सुक्ष्म रस्सीयां है।

९ यह ऐसा क्यों करता वा क्यों कहता, यह बात ऐसे नहीं, ऐसे होनी चाहिए। चित के अंदर यह प्रश्न उत्पन्न होने वाले को प्रश्नचित कहा जाता है और प्रश्नचित कभी सदा प्रसन्न नहीं रह सकता। उसके चित में सदा 'क्यों' की क्यू लगी रहती है। इसलिए उस क्यू को समाप्त करने में ही समय चला जाता है और यह क्यू फिर ऐसी होती है जो आप छोडने चाहो तो भी नहीं छोड सकते, समय देना ही पडेगा।

१० उदास कौन होता है? जो माया का दास बनता है। क्या करें, कैसे करें, ये कवेश्चन आना माना उदास होना।

११ जो भूलना है वह सेकेण्ड में भूल जाये और जो याद करना है वह सेकेण्ड में याद आए। कारण सिर्फ बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क है। क्यों सोचा और क्यू शुरु हो जाती है। ऐसा, वैसा, क्यों, क्या.. बडी क्यू शुरु हो जाती है, सिर्फ क्वेश्चन मार्क लगाने से।

१२ 'क्यों' का कवेश्चन उठने से व्यर्थ संकल्पों की क्यू लग जाती है।

१३ 'क्यों' आना माना चिंता की लहर है।

१४ पुरुषार्थ में कमजोर पुरुषार्थ का, एक शब्द का दरवाजा है, वह है 'क्यों'। क्वेश्चन मार्क, क्यों ? यह क्यों शब्द अभी क्यू को सामने नहीं लाता। तो बापदादा अभी देश-विदेश के सभी बच्चों को यह स्मृति दिला रहे हैं कि आप समस्याओं का दरवाजा 'क्यों', इसको समाप्त करो।

१५ "बाप को देखने के बजाए बातों को देखने लग जाते हो।

बातों मे जाने से फिर (१)कई कवेश्चन उत्पन्न हो जाते हैं। अगर बाप को देखो जैसे बाप बिन्दु है वैसे ही हर बात को बिन्दु लगा दो। बातें है वृक्ष और बाप है बीज। (२)आप विस्तार वाले वृक्ष को हाथ में उठाने चाहते हो इसलिए न बाप हाथ में आता है न वृक्ष। (३)बाप को भी किनारे कर देते हो और (४)वृक्ष के विस्तार को भी अपनी बुद्धि में समा नहीं सकते हो। तो जो चाहना रखते हो वह न पूरी होने के कारण (५)दिलशिकस्त हो जाते हो। दिलशिकस्त को (६)कोई छोटा कार्य भी मुश्किल लगता है। दिलशिकस्त की मुख्य निशानी होगी (७)बार-बार किसी न किसी की चाहे परिस्थिति की, चाहे व्यक्ति की शिकायतें ही करते रहेंगे। और (८)जितनी शिकायतें करते उतना ही खुद आपे ही फंसते जातें। क्योंकि यह विस्तार एक जाल बन जाता है। (९)जितना ही फिर उससे निकलने की कोशिश करते है उतना फंसते जाते। या होगी बातें या होगा बाप।

१६ बातों के विस्तार में रंग बिरंगी बातें होती हैं, वह अपनी तरफ आकर्षित कर लेती हैं। उससे किनारा हो जाए तो सदा सहज योगी हो जाए।

१७ बुद्धि को इसमें ज्यादा नहीं चलाओ नहीं तो एनर्जी वेस्ट चली जाती है और अपने को शक्तिशाली नहीं अनुभव करते।

१८ बच्चों में तीन शब्दों के कारण कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर कम हो जाती हैं। वह तीन शब्द हैं - 1. व्हाई (क्यों),

2. व्होट (क्या), 3. वोन्ट (चाहिए)। जितना बुद्धि का बैलेंस करता उतना कोई बंदर आकर बैठ जाता। इन तीनों बातों के बंदर आ जाते हैं तो बैलेंस क्या होगा ! हलचल हो जायेगी,बैलेंस नहीं रहेगा। तो यह तीन शब्द बैलेंस को समाप्त कर देते हैं, बुद्धि को नचाने लगते है। तो इसमें भी बैलेंस न होने के कारण बाप द्वारा हर कदम में जो दुआयें मिलती हैं वा आत्मिक स्नेह के कारण परिवार द्वारा जो दुआयें मिलती है उससे वंचित हो जाते हैं।

१९ ब्राह्मण अर्थात मौज, क्षत्रिय अर्थात मूंझना।

२० बीच-बीच में जो हलचल होती है -चाहे अपने से, चाहे सेवा से, चाहे साथियों से -यह हलचल निरंतर में अंतर ले आती है। तो सहन शक्ति की परसेन्टेज थोडी कम हो जाती है। हैं पक्के, लेकिन पक्के को भी कभी कभी ये बातें हिला देती हैं।

२१ बापदादा ने सबका तपस्या का पोतामेल देखा। तपस्या अगर कभी भी कम हुई तो उसका कारण क्या बना है? बीती को बीती करने में बिन्दी के बजाए क्वेश्चन मार्क लगा दिया।

२२ "स्व को सेकन्ड में व्यर्थ सोचने, देखने, बोलने और करने में फुलस्टोप लगाकर परिवर्तन करना।" समझते भी हो कि यही कमजोरी सुख की अनुभूति में अंतर लाती है, शक्ति स्वरुप बनने में वा बाप समान बनने में विघ्न स्वरुप बनती है।

२३ बिन्दी लगाने से एक सेकण्ड में आपके कितने खजाने बच जाते हैं। खजानों की लिस्ट तो जानते हो ना? अगर बिन्दी के बजाय और कोई मात्रा लगाते हो, वा लग जाती हैं, तो सोचो (१) ज्ञान का खजाना गया, (२) शक्तियों का खजाना गया, (३) गुणों का खजाना गया, (४) संकल्प का खजाना गया, (५) इनर्जी गई, (६) श्वास सफल के बजाए असफल में गया, (७) समय गया।

२४ व्हाई-व्हाई, हाय-हाय करा देता है।

२५ अच्छा आपने अपनी वृत्ति में किसी के प्रति भी अगर नेगेटिव भाव रखा, तो इससे आपको क्या फायदा है? अगर आपको इसमें फायदा है, फिर तो भले रखो, छुट्टी है। अगर फायदा नहीं है, परेशानी होती है..., वह बात सामने आयेगी। लेकिन वृत्ति में धारण करना यह रांग है क्योंकि अपने में ही मूडआफ, व्यर्थ संकल्प, याद की पावर कम, नुकशान होता है।

ड्रामा के ज्ञान को धारण करने की मुख्य पोईन्टस
अव्यकत वाणीयोंमे से

१ मनमना भव का अर्थ बहोत गुह्य है। "मन बिल्कुल जैसे ड्रामा सेकन्ड बाय सेकन्ड, जिस रीति से, जैसे चलता है उसीके साथ-साथ मन की स्थिति ऐसे ही ड्रामा की पटरी पर सीधी चलती रहे, जरा भी हिले नहीं - चाहे संकल्प से वा चाहे वाणी से।"

२ ऐसे ही इस बेहद के खेल का नाम ही है वेरायटी ड्रामा अर्थात खेल तो उसमें वेरायटी संस्कार व वेरायटी स्वभाव व वेरायटी परिस्थितियां देखकर कभी विचलित होंगे क्या?

३ हलचल के अंदर रत्न समाये हुये हैं। उपर-उपर से अर्थात बर्हिमुखता की द्रष्टि और बुद्धि द्वारा देखने से हलचल दिखाई देगी अथवा अनुभव होगी लेकिन उसी आई हुई बातों को अंतर्मुखी द्रष्टि व बुद्धि से देखने से अनेक प्रकार के ज्ञान-रत्न अर्थात प्वाईन्टस प्राप्त होंगे।

४ हर कदम में कल्याण है, जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है। सिर्फ अन्तरमुख होकर देखो।

५ जो भी दृश्य सामने आता है उसमें कल्याण भरा हुआ है। वर्तमान न भी जान सको लेकिन भविष्य में समाया हुआ कल्याण प्रत्यक्ष हो जायेगा।

६ हिसाब-किताब चुक्तु होने के कारण वा ड्रामानुसार समय प्रति समय प्रेक्टिकल पेपर होने के कारण कोई बातें अच्छे रुपमें सामने आयेगी, और कई बातों का बहार का रुप नुकशान का भी होगा लेकिन नुकशान के परदे के अंदर फायदा छीपा हुआ होता है।

७ जो हुआ वह अच्छा और जो होना है वो और अच्छा। अच्छाई उठाने की सिर्फ बुद्धि चाहिये। ऐसे अच्छाई उठाने से ही नंबर मिलते हैं।

८ ड्रामा में भी इतना ही अटल निश्चय हो, चाहे देखने में अच्छी बात न भी हो लेकिन उसमें भी गुप्त अच्छाई क्या भरी हुई है वो परखना चाहिये। तो ड्रामा की बात को परखने की बुद्धि चाहिये। निश्चय की पहचान ऐसे समय पर होती है।

९ अब समय किस ओर बढ रहा है यह जानते हो? अति की तरफ बढ रहा है। सभी तरफ अति दिखाई पड रही है। अंत की निशानी अति है।

१० फाईनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें कवेश्चन के रुपमें आयेगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। न चाहते हुए भी बुद्धिमें कवेश्चन उत्पन्न न हों, यही पेपर है। और है भी एक सेकन्ड का ही पेपर।

११ एक सेकन्ड का पेपर आना है। एक सेकन्ड में पास हो जाये इसका अभ्यास चाहिये।

१२ कुछ भी होता है अपनी सदा चढती कला है, क्युंकि दुनिया के लिये हाहाकार है और आपके लिये जय जयकार है। आप तो जानते हो कि ये दुनिया हाहाकार होनेवाली है अर्थात जानेवाली है। इसलिये किसी भी परिस्थिति में गभराना नहीं। हमारे लिये तैयारी हो रही है। साक्षी होकर सब प्रकार के खेल देखो। कोई रोता है, चिल्लाता है। साक्षी होकर देखने में मजा आता है।

१३ यह रिहर्सल हो रही है। फाईनल में हाहाकार के बीच जयजयकार होनी हैं। अति के बाद अंत और नये युग का आरंभ हो जायेगा। ऐसे समय पर न चाहते भी सबके मन से प्रत्यक्षता के नगाडे बजेंगे। तो रिहर्सल से पार हो गये, बेफिकर बादशाह बन पार्ट बजाया, बहोत अच्छा किया। सोच से तो असोच है ही।

१४ दुनिया की हालतें नाजुक हो रही है और ओर भी होगी। होनी ही है। अभी सिर्फ एक स्थान पर अलग अलग होती है, आखिर में सब तरफ इकठ्ठी होगी। तो नाजुक समय तो आना ही है। समय नाजुक हो लेकिन आपकी नेचर नाजुक नहीं हो।

१५ जैसा समय वैसा अपने को एडजेस्ट कर सको ऐसा अभ्यास आगे चलकर आपके बहोत काम में आयेगा। क्युंकि आपका फाईनल पेपर नाजुक समय पर ही होना है। आराम के समय पर नहीं।

१६ आप लोगों के आगे तो ऐसा समय आया नहीं है लेकिन आना है। जहां भी रहेते हो, सभी हिलने है, सब आधार टूटने हैं। ऐसे समय पर कौन सा आधार चाहिये? एक ही बाप का आधार। आखिर में यही आधार काम में आना है।

१७ अंतिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टोप लगाने पर ही मिलना है।

१८ आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया जाये और नई दुनिया आये, तो जायेगी कैसे? नीचे उपर होंगी तब तो जायेगी। कुछ भी हो जाए आपको बेफिकर बनना ही है। आपने ही आह्वान किया है कि पुरानी दुनिया खत्म हो। तो पुरानी दुनिया में पुराने मकान में क्या होता है? कभी क्या टूटता है, कभी क्या गिरता है, तो यह तो होगा ही। नथिंगन्यु। ब्रह्मा बाप का यही हर बात में शब्द था -"नथिंगन्यु" होना ही है, हो रहा है और हम बेफिकर बादशाह।

१९ अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी-'हे मुक्तिदाता मुक्ति दो' क्योंकि मुक्ति दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्तिदाता तो हो ना।

२० अगर आप समझते हो कि जल्दी-जल्दी बाप की प्रत्यक्षता हो तो तीव्र गति का प्रयत्न है सब अपनी वृत्ति को, अपने लिए, दूसरों के लिए पोजिटिव धारण करो।

२१ अगर आप फास्ट गति चाहते हो तो नोलेजफुल बन, क्षमा स्वरुप बन, रहमदिल बन, शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा

वायुमण्डल को परिवर्तन करो।

२२ एक सेकण्ड में प्वाइंट बन सकते हो? एक सेकण्ड में प्वाइंट लगा सकते हो? जब यह अभ्यास होगा, बार-बार का अभ्यास तब ही आने वाले अन्तिम समय में फुल प्वाइंट्स ले सकेंगे। पास विद ऑनर बन जायेंगे। यही परमात्मा पढाई है, यही परमात्मा पालना है।

२३ जो होता है वह कल्याणकारी है, ऐसा फुलस्टोप अर्थात बिन्दी लगानी है।

२४ बिन्दुरुप अर्थात पावरफुल स्टेज जिसमें व्यर्थ संकल्प नहीं चलते है और बिन्दु अर्थात बीती सो बीती।

२५ "आप और बाबा" ये दो शब्द में ज्ञान और योग आ जाता है। इसलिये टाईटल ही है सहज राजयोगी।

२६ सारा ज्ञान इसी एक डॉट शब्द में समाया हुआ है। आप भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और जो बीत गया उसे भी बिन्दी लगा दो, बस।

२७ पवित्रता का अर्थ ही है- सदा संकल्प, बोल, कर्म, संबंध और संपर्क में तीन बिन्दु का महत्व हर समय धारण करना।

२८ संगम पर सारा खेल ही तीन बिन्दियों का है।

२९ बिन्दी की कमाल है ना। पैसे में भी बिन्दी की कमाल है और श्रेष्ठ आत्मा बनने में भी बिन्दी की कमाल है। और करनकरावनहार भी बिन्दु है। तो सर्व तरफ किसका महत्व हुआ ! बिन्दुका ना। बस बिन्दु याद रखो और विस्तार में नहीं

जाओ, बिन्दु तो याद कर सकते। बिन्दु बनो, बिन्दु को याद करो और बिन्दु लगाओ, बस। यह है पुरुषार्थ।

३० और कोई मेहनत नहीं है, एक शब्द सिर्फ अभ्यास में लाओ "प्वाइंट"।

३१ समर्थ आंखे खुली हों अर्थात साक्षीपन की स्टेज पर रहो।

३२ साक्षी अर्थात सदा हर कार्य करते हुए कल्याणकारी वृत्ति में रहेनेवाले। जो कुछ हो रहा है उस में कल्याण भरा हुआ है।

३३ ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकडा है ना !

३४ बंधन सब समाप्त हो गये और जीवनमुक्त हो गए।

३५ अकल्याण का खाता खतम हुआ। कल्याणकारी बाप के बच्चे होने कारण, कल्याणकारी युग होने कारण अब कल्याण का खाता आरंभ हो चुका है।

३६ पहेले भी सुनाया था - संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही सदा समर्थ संकल्प है कि "जो होगा वह कल्याणकारी होगा - जो होगा वह श्रेष्ठ होगा, अच्छे ते अच्छा होगा।" ये संकल्प है जाल को समाप्त करना। जब की बुरे दिन, अकल्याण के दिन समाप्त हो गये। संगमयुग का हर दिन बडा दिन है

३७ 'एक गया लाख पाया' - ये है ब्राह्मणों का स्लोगन।

३८ अपने ब्राह्मण जीवन में बुरा होता ही नहीं।

३९ ब्राह्मण जीवन मौंजो की जीवन है।

४० ब्राह्मण जीवन अर्थात हर समाचार सुनते, कल्प पहले की

स्मृति में समर्थ रहे -जो होना है वह हो रहा है।

४१ ब्राह्मण लाइफ में क्या नहीं हो सकता? अकल्याण नहीं हो सकता।

४२ सदा खुशी में नाचने वाले हैं ! हलचल का समय समाप्त हो गया। पास्ट को पास्ट किया और फ्यूचर तो है ही बहुत सुंदर ! गोल्डन फ्यूचर है !

४३ ब्राह्मणों की जन्मपत्री में तीनों ही काल अच्छे से अच्छा है। जो हुआ वह भी अच्छा और जो हो रहा है वो और अच्छा और जो होने वाला है वह बहुत-बहुत अच्छा। तो आपकी आत्मा में अनगिनत बार करने के संस्कार भरे हुए है। क्या होगा ये संकल्प नहीं, लेकिन अच्छा ही हुआ पडा है। बाबा कहा और बाप के साथ का अनुभव उसी सेकन्ड, उसी संकल्प में होता ही है। सेकन्ड की बात है।

४४ मतलब तो ब्राह्मण जीवन में कुछ भी हो जाए, पोंजिटिव रुप में देखो।

४५ कुछ भी हो लेकिन अंदर से सदा ये आवाज निकले, 'वाह मीठा ड्रामा -वाह !' इतना ड्रामा का ज्ञान पक्का किया है? या जब अच्छी बात है तो वाह ड्रामा और हलचल की बात है तो हाय हाय।

४६ जो हुआ वाह ! वाह ! इससे भी कइओं का कुछ कल्याण ही होगा। इसलिये जलने में भी कल्याण तो बचने में भी कल्याण। हाय जल गया ! ऐसा नहीं कहेंगे। बचने के समय जैसे वाह ५०

वाह कहेते हैं ऐसे जलने के समय भी वाह वाह। इसी को ही एकरस स्थिति कहा जाता हैं।

४७ ब्रह्मा बाप भी कहते हैं – ड्रामा ने कर्मातीत बनाने के बंधन में बांधा। और बांधा कितने टाइम में ! समय होता तो और पार्ट हो जाता। इसलिए घडी का खेल हो गया। बच्चों को भी अंजान बना दिया, बाप को भी अंजान बना दिया। इसको कहते हैं – वाह, ड्रामा वाह ! यह ड्रामा की विचित्र नूंध होनी ही थी और होनी ही है। परिवर्तनशील ड्रामा पार्ट को भी परिवर्तन कर देता है।

४८ योगी आत्मा ही यह गीत गा सकती है, दुःखी आत्मा नहीं गा सकती। गीत है ही क्या – "वाह बाबा वाह और वाह मैं श्रेष्ठ आत्मा वाह, वाह ड्रामा वाह । योगी आत्मा ही यह गीत गा सकती है, दुःखी आत्मा नहीं गा सकती। गीत है ही क्या – "वाह बाबा वाह और वाह मैं श्रेष्ठ आत्मा वाह, वाह ड्रामा वाह ।"

४९ 'व्हाय' आये तो भी एक शब्द बोलो – वाह, 'वॉट' शब्द आये तो भी बोलो वाह। 'वाह' शब्द तो आता है ना। वाह बाबा, वाह मैं और वाह ड्रामा। सिर्फ 'वाह' बोलो तो यह तीन शब्द खत्म हो जायेगें। तो नये वर्ष में क्या याद रखेंगे? वाह–वाह। जो सामने देखा, जो सुना, जो बोला–सब वाह–वाह, हाय–हाय नहीं। हाय ये क्या हो गया ! नहीं, वाह, ये बहुत अच्छा हुआ।

कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये। पहले भी सुनाया था–ब्राह्मण जीवन का श्वास है उमंग–उत्साह। अगर श्वास चला जाये तो जीवन सेकण्ड में खत्म हो जायेगी न ! तो ब्राह्मण जीवन में यदि उमंग–उत्साह का श्वास नहीं तो ब्राह्मण जीवन नहीं।

५१ उमंग–उत्साह कभी कम नहीं होना चाहिये। उमंग–उत्साह कम क्यों होता है? बापदादा कहते हैं सदा वाह–वाह कहो और कहते हैं व्हाई–व्हाई (Why-Why)। अगर कोई भी परिस्थिति में व्हाई शब्द आ जाता है तो उमंग–उत्साह का प्रेशर कम हो जाता है।

५२ तकदीर की तस्वीर देखो और सदा अपने तकदीर की तस्वीर देख वाह–वाह का गीत गाओ। वाह मेरी तकदीर! वाह मेरा बाबा ! वाह मेरा परिवार ! परिवार भी वाह–वाह है ! ऐसे नहीं यह तो बहुत वाह–वाह है, यह थोडा ऐसा है ! नहीं । वाह मेरा परिवार ! वाह मेरा भाग्य ! और वाह मेरा बाबा ! ब्राह्मण जीवन अर्थात वाह–वाह ! हाय–हाय नहीं।

५३ अब ऐसे एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वास जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो। अभी कोई समय वाह–वाह होता हैं, कोई समय वाह के बजाए 'व्हाई' हो जाता है। कोई समय बिंदी लगाते हैं, कोई समय क्वेश्चन मार्क और आश्चर्य की मात्रा लग जाती है।

५४ जब व्हाई आवे ना तो उसको वाह वाह ! कर लो। कोइ भी

कुछ करता है, कहता है, वाह ड्रामा वाह! यह क्यों करता है, यह क्यों कहता, नहीं। यह करे तो मैं करुं, नहीं।

५५ समझदार बच्चे यही सोचेंगे कि जो कुछ होता है वह कल्याणकारी है।

५६ कुछ भी होता है होने दो । बाप हमारा हम बाप के तो कोई कुछ कर नहीं सकता, इसको कहा जाता है निश्चय बुद्धि।

५७ हर संकल्प बेस्ट, हर सेकन्ड बेस्ट ।

५८ ब्राह्मणों के कार्य में विघ्न न पडें तो लगन भी लग न सके। नहीं तो अलबेले हो जायें। इसलिए ड्रामा अनुसार लगन बढाने के लिए विघ्न पडते हैं।

५९ जो होगा वह अच्छे ते अच्छा होगा। तो सदा शुभ चिन्तक, सदा चिन्ताओं से परे निश्चयबुद्धि, निश्चिंत आत्मायें - यही तो जीवन है।

६० बाप ने अपने समान बना दिया। बाप कल्याणकारी तो बच्चे भी कल्याणकारी। बच्चों को बाप अपने से भी आगे रखते हैं। डबल पूजा आपकी है, डबल राज्य आप करते हो। इतना नशा और इतनी ख़ुशी सदा रहे–वाह रे मैं श्रेष्ठ आत्मा, वाह रे मैं पुण्य आत्मा, वाह रे मैं शिवशक्ति–इसी स्मृति में सदा रहो।

६१ ड्रामा का विचित्र पार्ट है, विचित्र का चित्र पहले नहीं खींचा जाता है। हल–चल का पेपर अचानक होता है। यह भी हर एक आत्मा का अपना अपना विचित्र पार्ट है।

६२ क्या हो गया वा जो हुआ वह अच्छा हुआ..... ये अपने उपर है।

६३ यह पूरा ही ज्ञान की पढाई खेल-खेल में है। मुश्किल काम नहीं दिया है। इसलिए काम भी सहज है और हो भी सहज-योगी।

६४ बेपरवाह बादशाह को सदा ही यह निश्चय रहता है कि जो हो रहा हैं वह अच्छा हो रहा हैं और जो होनेवाला हैं वह और भी बहोत अच्छा होगा। क्युंकि करानेवाला अच्छे ते अच्छा है न!

६५ बेफिकर बादशाह की विशेषता - वह सदा प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त रहते हैं।

६६ बेफिकर बादशाह ही बाप समान हैं। बाप को फिक्र हैं क्या? इतना बडा परिवार होते भी फिक्र है क्या? सबकुछ जानते हुए, देखते हुए बेफिकर।

६७ सबका एक जैसा पार्ट तो हो नहीं सकता। वेरायटी चाहिए। सर्व का पिता है तो कुमार भी चाहिए, कुमारियां भी चाहिए, अधरकुमार-अधरकुमारियां भी चाहिए - सर्व सेम्पल चाहिए।

६८ ★ हर एक के पार्ट की अपनी-अपनी विशेषता है। ★ हर एक की विशेषता अलग और महान है। ★ एक-दो के पार्ट को देखकर खुश रहो। ★ अपने पार्ट को कम नहीं समझो। ★ सबका पार्ट अच्छे-ते-अच्छा है।

६९ बाप जिम्मेवार है। जिनको निमित्त बनाया है उसका भी जिम्मेवार बाप है। आपके पाप को बदलने का भी जिम्मेवार है । निमित्त बनी हुई आत्माओं के लिए कुछ भी कहना

अर्थात बाप के लिए कहना। निमित्त बाप ने बनाया है ना। बाप से ज्यादा आपको परखने की शक्ति है?

७० जिसका भगवान मददगार है उसकी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी ! कल्प पहले का यादगार भी दिखाते हैं कि जहाँ भगवान है वहाँ विजय है। चाहे पाँच पान्डव दिखाते हैं, लेकिन विजय क्यों हुई? भगवान साथ है। कभी भी कोई कार्य में संकल्प नहीं उठना चाहिए कि ये होगा, नहीं होगा, विजय होगी या नहीं होगी - यह कवेश्चन उठ नहीं सकता। कभी भी बाप के साथ वाले की हार हो नहीं सकती। यह कल्प-कल्प की नूंध निश्चित है।

७१ योग विधि है। लेकिन इस विधि से सिद्धि क्या मिली? योग लगाना यह विधि है, योग की प्राप्ति यह सिद्धि है। तो जैसे 8 घण्टे का लक्ष्य रखा है तो कम से कम यह तीन प्रकार की सन्तुष्टता की सिद्धि का स्पष्ट श्रेष्ठ लक्ष्य रखो।

७२ जिस समय जो पार्ट मिलता है, उसमें राजी रह करके पार्ट बजाओ।

७३ माथा भारी उसका होता है जो छोटी सी गलती करते हैं। ब्राह्मण जीवन में कभी किसका माथा भारी हो नहीं सकता। होस्पिटल बनाने वालों का माथा भारी हुआ? ट्रस्टी सामने बैठे हैं ना ! जब करनकरावनहार बाप है तो अ ापको क्या बोझ है? यह तो निमित्त बनाकर भाग्य बनाने का साधन बना रहे हो । आपकी जिम्मेवारी क्या है? बाप के बजाए अपनी

जिम्मेवारी समझ लेते हैं तो माथा भारी होता है। बाप सर्व शक्तिवान मेरा साथी है तो क्या भारीपन होगा? छोटी सी गलती कर देते हो, मेरी जिम्मेवारी समझते हो तो माथा भारी होता है। तो ब्राह्मण जीवन है नाचो गाओ और मौज करो। सेवा चाहे वाचा है, चाहे कर्मणा, यह सेवा भी एक खेल है।

७४ जब भी क्यों का कवेश्चन आता है-क्यों हुआ, क्यों किया तो इससे सिद्ध है कि चक्र का ज्ञान पूरा नहीं है। अगर ड्रामा के राज को जान जाये तो क्यों, क्या का कवेश्चन उठ नहीं सकता। जब स्वयं भी कल्याणकारी और समय भी कल्याणकारी है तो यह क्या का कवेश्चन उठ सकता है? तो ड्रामा का ज्ञान और ड्रामा में भी समय का ज्ञान इसकी कमी है तो क्यों और क्या का कवेश्चन उठता है।

७५ कुछ भी आवे, कुछ भी हो जाये, परिस्थिति रुपी बडे ते बडा पहाड भी आ जाये, संस्कार टक्कर खाने के बादल भी आ जायें, प्रकृति भी पेपर ले, लेकिन अंगद समान मन-बुद्धि रुपी पाँव हिलाना नहीं, अचल रहना।

७६ जो सदा ही बाप की ब्लैसिंग का अनुभव करते रहते हैं उसके संकल्प में भी कभी-यह क्या हुआ, यह क्यों हुआ, यह आश्चर्य की निशानी नहीं होगी। क्या होगा - यह कवेश्चन भी नहीं उठेगा। सदैव इस निश्चय में पक्का होगा कि जो हो रहा है उसमें कल्याण छिपा हुआ है। क्योंकि कल्याणकारी युग है, कल्याणकारी बाप है और आप सबका काम भी विश्व कल्याण

का है, कल्याण ही समाया हुआ है। बाहर से कितना भी कोई कर्म हलचल का दिखाई दे लेकिन उस हलचल में भी कोई गुप्त कल्याण समाया हुआ होता है और बाप के श्रीमत तरफ, बाप के संबंध तरफ अटेन्शन खिंचवाने का कल्याण होता है।

७७ चाहे प्रकृति हलचल करे, चाहे प्रकृति सुन्दर खेल दिखाए– दोनों में प्रकृति–पति आत्माएं साक्षी हो खेल देखती है।

७८ बीती को बीती करना माना होली जलाना।

७९ पाठ पढाने की अच्छाई हर बात में समाई हुई है।

८० हमें राजधानी में आना है। यह याद रखो। राजधानी में आना अर्थात ब्राह्मण परिवार में संतुष्ट रहना और संतुष्ट करना, श्रेष्ठ संबंध में आना।

८१ प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है।

८२ जब बना–बनाया ड्रामा कहते हैं, तो बना हुआ है और बना रहे हैं अर्थात रिपीट कर रहे हैं। ऐसा निश्चयबुद्धि अचल–अडोल रहता है।

८३ इसलिए कहा जाता है बना बनाया ड्रामा। बना हुआ है सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।

८४ बाप भी कहते हैं–बना बनाया ड्रामा है, यह बदल नहीं सकता। रिपीट होना है लेकिन बदल नहीं सकता।

८५ जिस समय कोई बात होती है उस समय फुलस्टोप लगाओ। ऐसे नहीं कि याद था लेकिन उस समय भूल गया। गाडी में यदि समय पर ब्रेक न लगे तो फायदा होगा या नुकशान? तो समय पर फुलस्टोप लगाओ। नथिंग-न्यु- होना था, हो रहा है । और साक्षी होकर के देखकर आगे बढते चलो।

८६ पहले स्मृति निश्चय की होती हैं। संकल्प में निश्चय अर्थात् द्रढता होगी तो कर्म ओटोमेटिकली फल देंगे।

८७ यह निश्चय है ना कि अच्छे से अच्छा होना है, बुरा नहीं हो सकता। क्यों? अच्छे से अच्छा बाप मिला, अच्छे से अच्छे आप बने, अच्छे से अच्छे कर्म कर रहे हो। तो सब अच्छा है ना।

८८ निश्चय है इस ब्राह्मण जीवन का फाउन्डेशन। अगर निश्चय का फाउन्डेशन पक्का है तो कभी भी हिलेंगे नहीं। चाहे कितने भी तूफान आ जाये, चाहे कितने भी भूकंप आ जाये लेकिन हिलेंगे नहीं। तो निश्चय सब बातों में चाहिये। सिर्फ (१)बाप में निश्चय नहीं। लेकिन (२)अपने आपमें निश्चय, (३)ब्राह्मण परिवारमें भी निश्चय, (४)ड्रामा के हर दृश्य में भी निश्चय। तभी कहेंगे कि संपूर्ण निश्चयबुद्धि।

८९ जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय।

९० क्या, क्यों, कैसे-ये चिन्ता की लहर है। अभी बडी चिंता नहीं होगी, इस रुप में होगी, होना नहीं चाहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं।

९१ निश्चिंत आत्मा का सदा स्लोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ लेंगे। बुराई को बुराई के रुप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चयबुद्धि, निश्चिंत।

९२ कितना भी कोई भी हो लेकिन बापदादा अच्छाई को ही देखते हैं। इसलिये बापदादा सभी को अच्छा ही कहेंगे, बुरा नहीं कहेंगे। चाहे ९ बुराई हों और एक अच्छाई हो तो भी बाप क्या कहेगा? अच्छे है या कहेंगे कि ये तो बहुत खराब है, ये तो बडा कमजोर है?

९३ बंधन भी खींचता है और संबंध भी खींचता है लेकिन न्यारे होकर संबंध में आना यह अन्डरलाईन करना। इसी अभ्यासवाले ही पास विद ओनर होंगे। ये लास्ट कर्मातीत अवस्था है।

९४ हिसाब-किताब का टाइम बनता है तो कोई न कोई कारण से बन ही जाता है। भावी को नहीं टाल सकते। मृत्यु की डेट टल नहीं सकती। भगवान भी बदल नहीं सकता।

○ ○ ○ ○ ○

ड्रामा

मेरा मालिक है ।

और

बाबा

मेरा साथी है ।

(मातेश्वरी जगदंबा माँ)